318hi03

3

आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास

अर्थशास्त्र, दुर्लभता से सफलतापूर्वक निपटने के लिए तीव्र चुनाव से संबंधित अध्ययन है। दुर्लभ संसाधनों के आबंटन की सफलता के मूल्यांकन का सबसे अधिक मौलिक माप, आर्थिक संवृद्धि है। व्यक्ति, अपनी आय और परिसंपत्तियों के मूल्य में परिवर्तन पर निगरानी रखते हैं। व्यवसाय अपने लाभों तथा बाजार में अंश का ध्यान रखते हैं। राष्ट्र, राष्ट्रीय आय और उत्पादकता आदि जैसे आर्थिक संवृद्धि के मापने के विभिन्न आंकड़ों पर निगरानी रखते हैं। संवृद्धि और उत्पादकता से आगे बढ़कर, कुछ अर्थशास्त्री यह तर्क देते हैं कि राष्ट्र की अर्थव्यवस्था का अनुमान लगाने में वितरण का माप, समता, प्रति व्यक्ति आय आदि को भी सम्मिलित करना चाहिए। इसके अलावा देश को अन्य सामाजिक आवश्यकताओं पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जैसे–पर्यावरण न्याय या आर्थिक संवृद्धि की प्रक्रिया की निरंतरता के लिए सांस्कृतिक विकास और शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, रोजगार और पर्यावरण की धारणीयता के अधिक अवसरों के माध्यम से अर्थव्यवस्था के सर्वांगीण विकास की अनुमति देता है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप:

- आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास के अर्थ और अंतर को समझ पाएंगे;
- धारणीय विकास और मानव विकास की अवधारणाओं को समझ पाएंगे;
- आर्थिक संवृद्धि को प्रभावित करने वाले कारकों को जान पाएंगे; तथा
- विकासशील देशों की मुख्य विशेषताओं को समझ पाएंगे।

3.1 आर्थिक संवृद्धि

आर्थिक संवृद्धि पद को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसमें देश की वास्तविक राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में दीर्घ अवधि तक वृद्धि होती है।

टिप्पणियाँ

आर्थिक संवृद्धि की इस परिभाषा में आर्थिक संवृद्धि की निम्न विशेषताएं सम्मिलित हैं–

- आर्थिक संवृद्धि, राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की प्रक्रिया का सम्मिलित संकेत करती है। प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि, आर्थिक संवृद्धि का एक बेहतर माप है, क्योंकि यह आम जनता के रहन-सहन के स्तर में वृद्धि की ओर संकेत करती है।
- आर्थिक संवृद्धि की माप राष्ट्रीय आय में वास्तविक वृद्धि के रूप में की जाती है, न केवल मौद्रिक आय अथवा सांकेतिक राष्ट्रीय आय में वृद्धि के रूप में। दूसरे शब्दों में, वृद्धि वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि के रूप में होनी चाहिए। केवल विद्यमान वस्तु की बाजार कीमत में वृद्धि के कारण नहीं।
- राष्ट्रीय आय में वृद्धि दीर्घ काल के लिए होनी चाहिए। राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि दीर्घ कालीन अवधि तक रहनी चाहिए। आय में अल्प कालीन, मौसमी या अस्थायी वृद्धि को आर्थिक संवृद्धि से भ्रमित नहीं करना चाहिए।
- आय में वृद्धि, उत्पादन क्षमता में वृद्धि पर आधारित होनी चाहिए : अर्थव्यवस्था की आय में वृद्धि तभी निरंतर हो सकती है, जबकि यह वृद्धि उत्पादन क्षमता में स्थायी वृद्धि जैसे आधुनिकीकरण अथवा उत्पादन में नई प्रौद्योगिकी के प्रयोग के कारण, आधारिक संरचना के शक्तिशाली होने जैसे परिवहन नैटवर्क, बिजली के उत्पादन में वृद्धि आदि के कारण हो।

3.2 आर्थिक विकास

आर्थिक विकास को समाज के भौतिक कल्याण में निरंतर वृद्धि के रूप में परिभाषित किया जाता है। आर्थिक विकास, आर्थिक संवृद्धि से अधिक व्यापक अवधारणा है। राष्ट्रीय आय में वृद्धि के अलावा इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिवर्तन, सम्मिलित होते हैं, जो कि भौतिक उन्नति में योगदान देते हैं। इसमें, संसाधनों की आपूर्ति, पूंजी निर्माण की दर, जनसंख्या का आकार और बनावट, प्रौद्योगिकी, कौशल और कार्य-कुशलता, संस्थागत तथा प्रबंध व्यवस्था में परिवर्तन शामिल होते हैं। ये परिवर्तन अधिक विस्तृत उद्देश्यों, जैसे–आय के अधिक समान वितरण की सुनिश्चितता, अधिक रोजगार, निर्धनता उन्मूलन को पूरा करते हैं। संक्षेप में, आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें पूर्ति के मौलिक कारकों तथा मांग की बनावट जैसे अंतर्संबंधित परिवर्तनों की एक लंबी श्रेणी सम्मिलित होती है, जिनसे देश के शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन में दीर्घकाल तक वृद्धि होती है।

आर्थिक संवृद्धि एक संकुचित पद है। उसमें उत्पादन में मात्रात्मक वृद्धि शामिल होती है, किंतु आर्थिक विकास में उत्पादन या राष्ट्रीय आय में मात्रात्मक वृद्धि के साथ गुणात्मक परिवर्तन जैसे सामाजिक दृष्टिकोण, रीति-रिवाज आदि भी सम्मिलित हैं।

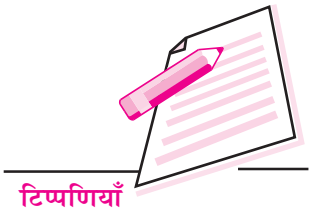

3.3 आर्थिक संवृद्धि तथा आर्थिक विकास का तुलनात्मक चार्ट

	आर्थिक संवृद्धि	आर्थिक विकास
अर्थ	आर्थिक संवृद्धि से अभिप्राय देश में वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वास्तविक वृद्धि से है।	आर्थिक विकास में, आय बचत निवेश में परिवर्तनों के साथ-साथ एक देश के सामाजिक और आर्थिक ढांचे में प्रगतिशील परिवर्तन भी शामिल है। (संस्थागत और प्रौद्योगिकी परिवर्तन)
कारक	आर्थिक संवृद्धि का संबंध सकल घरेलू उत्पाद के किसी घटक, जैसे–उपभोग, सरकारी व्यय, निवेश, शुद्ध निर्यात में उत्तरोत्तर वृद्धि से है।	विकास का संबंध, मानव पूंजी में वृद्धि, असमानता के अंकों में कमी, और संरचनात्मक परिवर्तनों से है जिनसे जनसंख्या के जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है।
माप	आर्थिक संवृद्धि की मात्रात्मक कारकों, जैसे–वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद अथवा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि द्वारा मापा जाता है	आर्थिक विकास को मापने के लिए गुणात्मक माप जैसे मानव सूचकांक, साक्षरता दर आदि का प्रयोग किया जाता है
प्रभाव	आर्थिक संवृद्धि अर्थव्यवस्था में मात्रात्मक परिवर्तन लाती है	आर्थिक विकास अर्थव्यवस्था मात्रात्मक परिवर्तनों के साथ-साथ गुणात्मक परिवर्तन भी लाता है
प्रसंग	आर्थिक संवृद्धि, राष्ट्रीय आय अथवा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि पर प्रतिबिंब डालती है।	आर्थिक विकास किसी अर्थव्यवस्था में जीवन की गुणवत्ता की उन्नति को प्रतिबिंबित करता है।

पाठगत प्रश्न 3.1

1. आर्थिक विकास, आर्थिक संवृद्धि से अधिक व्यापक अवधारणा है। क्या आप इस कथन से सहमत है?

3.4 धारणीय विकास

धारणीय विकास एक ऐसा विकास है, जो भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। धारणीय विकास में भावी आर्थिक संवृद्धि तथा भावी विकास के संरक्षण सम्मिलित होता हैं। अन्य शब्दों में, इसका अभिप्राय प्रत्येक व्यक्ति के लिए जीवन की बेहतर गुणवत्ता से है। धारणीय विकास में भावी आर्थिक संवृद्धि तथा भावी विकास का संरक्षण सम्मिलित होता है। संवृद्धि अनिवार्य है, किंतु धारणीय विकास इसे विभिन्न प्रकार से देखता है। इसका संबंध भौतिक पर्यावरण से अधिक

होना चाहिए, न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए, किंतु भावी पीढ़ी के लिए भी। इसका अभिप्राय है कि वर्तमान उपयोग की व्यवस्था आर्थिक ऋण को बढ़ाकर तथा परिस्थितिकीय असंतुलन लाकर, जिनका भुगतान भावी पीढ़ी करेगी, दीर्घकाल तक नहीं की जा सकती। धारणीय विकास, सामाजिक और आर्थिक उन्नति के लिए ऐसी विधियों की लगातार खोज करता है, जिनसे पृथ्वी के सीमित प्राकृतिक संसाधन समाप्त नहीं होंगे। धारणीय विकास, विकास की ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें विकास लाने के लिए आर्थिक तथा अन्य नीतियां बनाई जाती है, जो आर्थिक, सामाजिक और परिस्थितिकीय धारणीय होती हैं। इस प्रकार, यह अवधारणा व्यक्तियों, रोजगार और प्रकृति के पक्ष से होती है। यह, निर्धनता कम करने, उत्पादक रोजगार, सामाजिक गठबंधन तथा पर्यावरण पुनरुत्थान को उच्चतम प्राथमिकता देती है।

इस प्रकार धारणीय विकास के लिए आवश्यकता है–

- परिस्थितिकीय संसाधनों को सुरक्षित रखना तथा नवीकरणीय संसाधनों का अधिक प्रयोग करना
- विकास के लिए पर्यावरण के लिए सुरक्षित प्रौद्योगिकी के प्रयोग को प्रोत्साहन देना अर्थात् आर्थिक क्रियाओं से होने वाले सभी प्रकार के प्रदूषणों को कम करने पर ध्यान केंद्रित करने से है।
- पारिस्थितिकीय और आर्थिक सुरक्षा को सम्मिलित करके लोगों की सुरक्षा और मानव न्याय की नीतियों का खाका तैयार करने और लागू करने से है।

3.5 मानव विकास

संयुक्त राष्ट्र की विकास योजना के अनुसार, मानव विकास को लोगों के चयन में वृद्धि की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। विकास के सभी स्तरों पर लोगों के तीन अनिवार्य चुनाव में एक दीर्घकालीन स्वस्थ जीवन व्यतीत करना, अच्छा ज्ञान प्राप्त करना तथा शानदार जीवन स्तर के लिए आवश्यक संसाधनों की पहुंच सम्मिलित हैं। यदि वह आवश्यक चुनाव उपलब्ध नहीं हैं तो जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए बहुत से अन्य अवसर पहुंच के बाहर होंगे। मानव विकास के दो आयाम हैं–मानव योग्यता प्राप्त करना और इन प्राप्त योग्यताओं का प्रयोग, उत्पादकता, आराम और अन्य उद्देश्यों के लिए करने से है। मानव विकास के लाभ, आय विस्तर और धन संचय से कहीं अधिक आगे तक जाते हैं, क्योंकि लोग मानव विकास की आवश्यकता का निर्माण करते हैं। मानव विकास, आर्थिक संवृद्धि से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। आर्थिक संवृद्धि केवल एक विकल्प में सुधार पर ध्यान केंद्रित करती है अर्थात् आय या उत्पाद, जबकि मानव विकास सभी मानवीय विकल्पों में वृद्धि, जिनमें–शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छ पर्यावरण और भौतिक कल्याण शामिल हैं, पर ध्यान केंद्रित करता है। इस प्रकार लोगों के जीवन को सुधारने के विकल्प विस्तृत रूप से आर्थिक संवृद्धि की गुणवत्ता से प्रभावित होते हैं, किंतु इस प्रकार की संवृद्धि का प्रभाव केवल इसके परिमाणात्मक पहलू तक ही सीमित

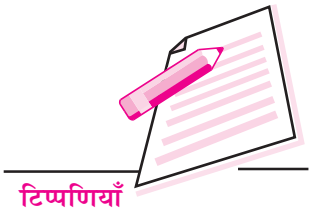

रहता है। दूसरे शब्दों में, आर्थिक संवृद्धि को एक साधन के रूप में देखने की आवश्यकता है। यद्यपि एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में, किंतु विकास के एक अंतिम उद्देश्य के रूप में नहीं। आय, मोटे रूप से मानव कल्याण में एक महत्वपूर्ण योगदान देती है, यदि इसके लाभ लोगों के जीवन में सुधार लाने के लिए हों। किंतु आय में संवृद्धि अपने में एक उद्देश्य नहीं है। संवृद्धि की गुणवत्ता है, न कि इसका परिमाण, जो कि मानव के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार, मानव विकास की अवधारणा का संबंध मुख्य रूप से, मानव प्रयास के अंतिम उद्देश्य, लोगों को अच्छा जीवन बिताने के योग्य बनाने से है। देखना है कि यह उद्देश्य केवल आय में सुधार के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है अथवा लोगों के भौतिक कल्याण से। जैसा कि 1996 की मानव विकास रिपोर्ट में कहा गया, संवृद्धि रोजगार सृजन की अपेक्षा बिना रोजगार का, निर्धनता कम करने की अपेक्षा, क्रूर, भागीदार होने की अपेक्षा बिना आवाज का, सांस्कृतिक रूप से ऊंचा होने की अपेक्षा, निर्मूल, पर्यावरण के अनुकूल होने की अपेक्षा बिना भविष्य का हो सकता है। आर्थिक संवृद्धि, जो कि बिना रोजगार, क्रूर, बिना आवाज तथा बिना भविष्य की है, मानव विकास की प्रेरक नहीं होती। आय का अभाव अथवा आय की निर्धनता, मानव निर्धनता का एक पहलू है, अभाव का कष्ट अन्य क्षेत्रों मे भी हो सकता है, जैसे–कम तथा अस्वस्थ जीवन, अशिक्षित अथवा भागीदारी की अनुमति का न होना, व्यक्तिगत असुरक्षा अनुभव करना आदि। इस प्रकार, मानव निर्धनता, आय की निर्धनता से अधिक बड़ी है।

3.6 मानव विकास को मापना : मानव विकास सूचकांक (HDI)

जैसा पहले कहा जा चुका है कि मानव विकास की तीन दिशाएं, लोगों की दीर्घ तथा स्वस्थ जीवन–यापन करने की क्षमताएं, ज्ञान प्राप्त करना तथा एक शानदार जीवन स्तर के लिए अनिवार्य संसाधनों तक पहुंच हैं। मानव विकास के विभिन्न घटकों का मिला–जुला प्रभाव, मानव विकास सूचकांक (HDI) के माध्यम से मापा जाता है। मानव विकास सूचकांक के चार चर हैं। जन्म के समय जीवन की प्रत्याशा (दीर्घ स्वस्थ जीवन की दिशा को प्रदर्शन करना), वयस्क साक्षरता दर और ज्ञान की दिशा का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्राथमिक, द्वितीयक तथा विश्वविद्यालय स्तर का मिश्रित नामांकन और प्रति व्यक्ति वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद, जो शानदार जीवन स्तर के लिए अनिवार्य संसाधनों का प्रतिनिधित्व कर सके। इस प्रकार, मानव विकास सूचकांक न केवल सकल घरेलू उत्पाद की संवृद्धि दर, बल्कि देश के मानव विकास को मापने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, लिंग, असमानता तथा आय की स्थिर राशि पर भी विचार करता है।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, जो तीन योग्यता अर्थात् एक दीर्घ और स्वस्थ जीवन बिताना, शिक्षित तथा योग्य होना तथा एक शानदार आर्थिक रहन–सहन का स्तर रखना, के आधार पर मानव विकास सूचकांक का अनुमान लगाता है। उसकी 2013 में छापी गई अंतिम उपलब्ध मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार, 2012 में भारत का सूचकांक 0.554 था, जो विश्व के कुल स्तर में 186 में से 136 था, मानव विकास रिपोर्ट, 2012 की तुलना में जो 187 देशों में 134 था। भारत का मानव विकास सूचकांक 1980 से प्रतिवर्ष 1.7 प्रतिशत बढ़ गया है।

पाठगत प्रश्न 3.2

1. मानव विकास, आर्थिक विकास का एक अच्छा माप है, क्योंकि यह मनुष्यों को, विकास की केंद्रीय अवस्था पर स्थान देता है। तर्क द्वारा सिद्ध कीजिए।

3.7 आर्थिक संवृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक

आर्थिक विकास की प्रक्रिया एक बहुत ही जटिल परिघटना है और बहुत से तथा विभिन्न प्रकार के कारकों, जैसे–राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारकों द्वारा प्रभावित होता है। ये कारक निम्नलिखित हैं–

1. आर्थिक कारक

(i) प्राकृतिक संसाधन : किसी अर्थव्यवस्था के विकास को प्रभावित करने वाला मुख्य कारक प्राकृतिक संसाधन है। प्राकृतिक संसाधनों में भूमि, क्षेत्र और मिट्टी की गुणवत्ता, वन संपत्ति, अच्छी नदी पद्धति, खनिज व तेल संसाधन और अच्छी जलवायु आदि सम्मिलित हैं। आर्थिक संवृद्धि के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अधिक मात्रा में होना अनिवार्य है।

प्राकृतिक संसाधनों में कमी वाला देश, तीव्र गति से अधिक विकास करने की स्थिति में नहीं हो सकता, लेकिन अच्छे प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता आर्थिक संवृद्धि के लिए आवश्यक शर्तें हैं, किंतु यह पर्याप्त नहीं है। कम विकसित देशों में प्राकृतिक संसाधन अप्रयुक्त, अल्पप्रयुक्त अथवा गलत प्रयुक्त होते हैं। उनके पिछड़ेपन के कारणों में से एक है। दूसरी ओर, देश जापान, सिंगापुर आदि में पर्याप्त संसाधन नहीं हैं, किंतु वे संसार के विकसित देशों में से हैं। इन देशों ने उपलब्ध संसाधनों को सुरक्षित रखने में, संसाधनों के प्रबंध का सर्वोत्तम प्रयास तथा संसाधनों की बरबादी को न्यूनतम करने में वचनबद्धता दिखाई है।

(ii) पूंजी निर्माण : किसी अर्थव्यवस्था के विकास के लिए पूंजी निर्माण एक दूसरा महत्वपूर्ण कारक है। पूंजी निर्माण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा किसी समुदाय की बचतों को पंजीगत वस्तुओं, जैसे–प्लांट, उपस्कर और मशीनों के निवेश के लिए प्रयोग किया जाता है, जिससे देश की उत्पादन क्षमता तथा श्रमिकों की कुशलता में वृद्धि होती है तथा देश में वस्तुओं और सेवाओं के अधिक प्रवाह को सुनिश्चित किया जाता है। पूंजी निर्माण की प्रक्रिया यह संकेत देती है कि समुदाय अपनी समस्त आय वर्तमान उपभोग की वस्तुओं पर नहीं खर्च करता, किंतु इसका एक भाग बचा लेता है और इसका प्रयोग पूंजीगत वस्तुओं का उत्पादन करने अथवा उन्हें प्राप्त करने में करता है, जो राष्ट्र की उत्पादन क्षमता में बहुत अधिक वृद्धि लाता है।

(iii) तकनीकी उन्नति : आर्थिक संवृद्धि को प्रभावित करने के लिए तकनीकी उन्नति बहुत महत्वपूर्ण कारक है। तकनीकी उन्नति, पुरानी विधियों में सुधार तथा उत्पादन की नई और

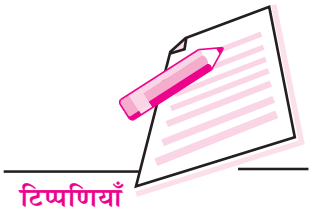

बेहतर विधियों के अनुसंधान का संकेत देती है। कभी-कभी तकनीकी उन्नति का परिणाम उत्पादकता में वृद्धि होता है। दूसरे शब्दों में, तकनीकी उन्नति, प्राकृतिक संसाधनों तथा अन्य संसाधनों का उत्पादन में वृद्धि करने के लिए अधिक प्रभावशाली तथा अधिक लाभप्रद प्रयोग करने की क्षमता को बढ़ाती है। अच्छी तकनीक के प्रयोग से दिए गए संसाधनों की सहायता से अधिक उत्पादन करना अथवा संसाधनों की कम मात्रा से उतना ही उत्पादन करना संभव हो जाता है। तकनीकी उन्नति प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण प्रयोग करने की योग्यता में सुधार लाती है। उदाहरण के लिए, शक्ति के साधनों द्वारा चलाए जाने वाले कृषि के उपस्करों के प्रयोग से कृषि के उत्पादन में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, जापान तथा अन्य उन्नतिशील औद्योगिक राष्ट्र सबने उन्नतिशील तकनीकी के प्रयोग से औद्योगिक शक्ति प्राप्त कर ली है। वास्तव में, उत्पादन की नई तकनीकी अपनाने से आर्थिक उन्नति में सुविधा हो जाती है।

(iv) उद्यमशीलता : उद्यमशीलता निवेश के नए अवसरों का पता लगाने की योग्यता की ओर संकेत है। इससे जोखिम उठाने तथा नई और बढ़ती हुई व्यावसायिक इकाइयों में निवेश करने की इच्छा में वृद्धि होती है। विश्व में बहुत से अल्प विकसित देश, पूंजी की कमी, आधारिक संरचना, अकुशल श्रमिक, प्राकृतिक संसाधनों की कमी के कारण नहीं, किंतु उद्यमशीलता की बहुत अधिक कमी के कारण निर्धन हैं, इसलिए अल्पविकसित देशों में शिक्षा, नए अनुसंधान तथा वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास को प्रोत्साहन देकर उद्यमशीलता को बढ़ावा देने का वातावरण सृजित करना अनिवार्य है।

(v) मानव संसाधन विकास : आर्थिक संवृद्धि के स्तर के निर्धारण के लिए अच्छी गुणवत्ता वाली जनसंख्या का होना बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसलिए, मानव पूंजी में, शैक्षिक, चिकित्सा संबंधी और ऐसी अन्य सामाजिक योजनाओं के रूप में निवेश बहुत अधिक वांछनीय है। मानव संसाधन विकास लोगों के ज्ञान, कौशल तथा उनकी उत्पादकता बढ़ाने की क्षमता में वृद्धि लाता है।

(vi) जनसंख्या वृद्धि : श्रम की पूर्ति जनसंख्या वृद्धि से होती है और इससे वस्तुओं और सेवाओं के विस्तृत बाजार उपलब्ध होते हैं। इस प्रकार, अधिक श्रम अधिक उत्पादन करता है, जिसे विस्तृत बाजार आत्मसात करता है। इस प्रक्रिया में, उत्पादन, आय तथा रोजगार बढ़ते जाते हैं और आर्थिक संवृद्धि में सुधार होता है। किंतु जनसंख्या में वृद्धि सामान्य होनी चाहिए। एक दौड़ती हुई जनसंख्या आर्थिक उन्नति में रुकावट लाती है। जनसंख्या में वृद्धि केवल एक अल्प जनसंख्या वाले देश में वांछनीय है, किंतु भारत जैसे अधिक जनसंख्या वाले देश में यह वांछनीय नहीं है।

(vii) सामाजिक लागतें : आर्थिक संवृद्धि का एक अन्य निर्धारक सामाजिक लागतों का प्रावधान है। जैसे–स्कूल, कॉलेज, तकनीकी संस्थाएं, चिकित्सा महाविद्यालय, अस्पताल तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाएं हैं। ऐसी सुविधाएं कार्यशील जनसंख्या को स्वस्थ, कुशल तथा उत्तरदायी बनाती हैं। ऐसे लोग अपने देश को आर्थिक रूप से आगे बढ़ा सकते हैं।

गैर-आर्थिक कारक

गैर-आर्थिक कारक, जिनमें सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक तथा राजनीतिक कारक सम्मिलित हैं, भी आर्थिक विकास में समान रूप से महत्वपूर्ण हैं, जैसे कि आर्थिक कारक हैं। हम यहां कुछ अनिवाय और गैर-आर्थिक कारकों की व्याख्या करेंगे, जिन पर किसी देश की आर्थिक संवृद्धि निर्भर करती है–

1. **राजनीतिक कारक :** आधुनिक आर्थिक संवृद्धि में राजनीतिक स्थिरता तथा मजबूत प्रशासन अनिवार्य तथा सहायक हैं। एक स्थिर, शक्तिशाली तथा कुशल सरकार, ईमानदार प्रशासन, पारदर्शक नीतियां और उनको कुशलतापूर्वक लागू करने से निवेशकों के विश्वास में विकास होता है तथा इससे घरेलू तथा विदेशी पूंजी आकर्षित होती है, जिससे आर्थिक विकास तीव्र गति से होता है।

2. **सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारक :** सामाजिक कारकों में सामाजिक दृष्टिकोण, सामाजिक मूल्य तथा सामाजिक संस्थाएं सम्मिलित हैं, जो शिक्षा के विस्तार और एक समाज से दूसरे समाज में रूपांतरण से परिवर्तित होते हैं। आधुनिक विचारधारा, मूल्य तथा दृष्टिकोण से नई खोज तथा नवोत्पाद लाते हैं तथा परिणामस्वरूप नए उद्यमियों में वृद्धि होती है। पुराने सामाजिक रीति-रिवाज, व्यावसायिक और भौगोलिक गतिशीलता को सीमित करते हैं और इस प्रकार आर्थिक विकास में बाधा लाते हें।

3. **शिक्षा :** यह अब भली प्रकार स्वीकार कर लिया गया है कि शिक्षा विकास का एक मुख्य साधन है। उन देशों में अधिक उन्नति प्राप्त कर ली गई, जहां शिक्षा का अधिक विस्तार है। शिक्षा की मानव संसाधन विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका है। इससे श्रम की कुशलता में सुधार होता है और मानसिक संकुचित विचार नए विचारों और ज्ञान में सुधार लाते हैं, जिनसे आर्थिक विकास में सहायता मिलती है।

4. **भौतिक सुधार की इच्छा :** भौतिक उन्नति की इच्छा, आर्थिक विकास के लिए एक आवश्यक पहली शर्त है। समाज, जो स्व-संतुष्टि, स्व-स्वीकार, भाग्य में विश्वास आदि रखते हैं, जोखिम तथा साहस को सीमित करते हैं तथा देश को पिछड़ा हुआ रखते हैं।

पाठगत प्रश्न 3.3

1. गैर-आर्थिक कारक भी आर्थिक विकास में उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने आर्थिक कारक। टिप्पणी कीजिए।

अल्पविकसित देशों की सामान्य विशेषताएं

1. **प्रति व्यक्ति निम्न आय :** अल्प विकसित देशों में प्रति व्यक्ति आय का स्तर बहुत नीचा होता है।

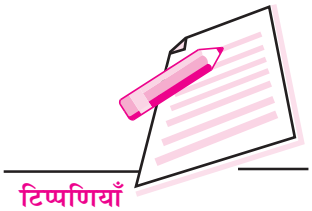

2. **निर्वाह का निम्न स्तर :** अल्प विकसित देशों में, अधिकतर लोग निर्धनता, कुपोषण, बीमारी, अशिक्षा आदि की स्थिति में रहते हैं। निर्धन जनता को जीवन की मूल आवश्यकताएं, जैसे–न्यूनतम भोजन, वस्त्र तथा मकान भी आसानी से उपलब्ध नहीं होते।

3. **जनसंख्या में तीव्र दर से वृद्धि :** अल्प विकसित देशों में जनसंख्या में वृद्धि आर्थिक संवृद्धि को निष्प्रभाव कर देती है। अधिक जनसंख्या से अभिप्राय, अधिक उपभोग व्यय तथा उत्पादक गतिविधियों में निम्न निवेश, आर्थिक विकास को धीमा कर देता है।

4. **आय का बहुत अधिक असमान वितरण :** अल्प विकसित देशों में निर्धन तथा धनी व्यक्तियों में आय की असमानता बहुत अधिक होती है।

5. **आम जनता की व्यापक निर्धनता :** अल्प विकसित देशों में प्रति व्यक्ति आय का नीचा स्तर तथा इसके वितरण में ऊंचे स्तर की असमानता, आम जनता की व्यापक निर्धनता का कारण बनती है।

6. **उत्पादकता का नीचा स्तर :** उत्पादकता का स्तर अर्थात् प्रति व्यक्ति उत्पाद अल्प विकसित देशों में बहुत नीचा होने की प्रवृत्ति होती है, जो कि मुख्य रूप से–(i) अकुशल श्रम शक्ति, जो स्वयं निर्धनता का परिणाम है, खराब स्वास्थ्य और शिक्षा का अभाव, (ii) निम्न कार्य सभ्यता तथा (iii) मशीनों और उपस्करों के रूप में पूंजी का कम प्रयोग के कारण हैं।

7. **पूंजी निर्माण की नीची दर :** अल्प विकसित देशों में बचत की दर काफी नीची होती है और पूंजी निर्माण की दर भी नीची होती है।

8. **तकनीकी पिछड़ापन :** अल्प विकसित देशों के अधिकतर क्षेत्रों में बचत की दर नीची होने के कारण आम तौर पर पुरानी (अप्रचलित) उत्पादन तकनीक का प्रयोग किया जाता है।

9. **बेरोजगारी का ऊंचा स्तर :** अल्प विकसित देशों बेरोजगारी का स्तर बहुत ऊंचा होता है, क्योंकि पूंजी के अभाव के कारण तथा विभिन्न आर्थिक क्षेत्र में निम्न स्तर का विकास होने के कारण ये देश बढ़ती हुई श्रम शक्ति की पूर्ति को रोजगार देने में समर्थ नहीं होते।

10. **विकास के सामाजिक निर्देशकों का नीचा स्तर :** अल्प विकसित देशों में सामाजिक निर्देशकों का स्तर, जैसे–नीची साक्षरता दर, शिशु मृत्यु की ऊंची दर, जीवन की कम प्रत्याशा आदि विकसित देशों की तुलना में बहुत नीचा होता है।

पाठगत प्रश्न 3.4

1. निम्न में से कौन-सी विशेषताएं विकासशील देशों में होने की अधिक संभावना पाई जाती है?

   (a) कृषि में उत्पादन की परंपरागत विधियों का प्रयोग

(b) अधिकतर लोगों का निर्धनता में रहना

(c) कृषि में उत्पादन की परंपरागत विधियों का प्रयोग

(d) उपयुक्त सभी

(e) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

2. आर्थिक विकास से अभिप्राय है–

(a) आर्थिक संवृद्धि

(b) आर्थिक संवृद्धि के साथ उत्पादन वितरण आर्थिक संरचना में परिवर्तन

(c) सकल राष्ट्रीय उत्पाद में धारणीय वृद्धि

3. आर्थिक विकास का साधारण माप है–

(a) जनसंख्या का स्वास्थ्य और शिक्षा का स्तर

(b) जनसंख्या की वृद्धि दर

(c) प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद

(d) उपर्युक्त सभी

(e) उपुर्यक्त में से कोई नहीं

4. विकासशील देशों में होते हैं–

(a) एक नीची शिशु मृत्यु दर

(b) आय के वितरण में ऊंचे स्तर की समानता

(c) अशिक्षा की नीची दर

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

5. धारणीय विकास में सम्मिलित है–

(a) उपभोग कम करना, कार्य-कुशलता को बढ़ाना और नवीकरणीय शक्ति का प्रयोग

(b) अधिक सड़कें बनाकर अच्छा परिवहन

(c) संसाधनों का अधिकतम दर से प्रयोग करना

6. धारणीयता संसाधनों का इस प्रकार प्रयोग है, जिससे संसाधनों का दीर्घकालीन क्षय नहीं होता अथवा परिस्थितिकीय विविधता पर प्रभाव पड़ता है–

(a) ठीक

(b) गलत

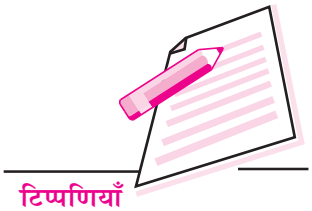

7. मानव विकास सूचकांक में वर्तमान में कौन-से तीन सूचकों का प्रयोग किया जाता है–

   (a) प्रति व्यक्ति वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद

   (b) जन्म दरें

   (c) जन्म के साथ जीवन की प्रत्याशा

   (d) रोजगार की दरें

   (e) शैक्षिक योग्यता

आपने क्या सीखा

- आर्थिक संवृद्धि से अभिप्राय वास्तविक राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की प्रक्रिया से है।
- आर्थिक विकास को समाज में भौतिक कल्याण, धारणीय सुधार के रूप में परिभाषित किया जाता है।
- धारणीय विकास एक ऐसा विकास है, जो कि भावी पीढ़ियों की आवश्यकता पूर्ति की में समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।
- मानव विकास को लोगों के चुनाव में वृद्धि लाने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के अनुसार, मानव विकास सूचकांक में तीन मौलिक योग्यताएं (सूचक) सम्मिलित हैं, एक दीर्घ तथा स्वस्थ जीवन व्यतीत करना, शिक्षित तथा कौशल पूर्ण होना तथा एक शानदार आर्थिक जीवन स्तर का आनंद उठाना।
- आर्थिक संवृद्धि को निर्धारित करने वाले आर्थिक कारक प्राकृतिक संसाधन, पूंजी निर्माण, तकनीकी उन्नति, उद्यमशीलता, मानव संसाधन विकास, जनसंख्या में वृद्धि तथा सामाजिक लागतें हैं।
- संवृद्धि और विकास को निर्धारित करने वाले गैर-आर्थिक कारक राजनीतिक कारक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक कारक, शिक्षा तथा भौतिक सुधाार की इच्छा हैं।
- विकासशील देशों के सामान्य कारक–(i) प्रति व्यक्ति नीची आय, (ii) आजीविका का निर्धन स्तर, (iii) जनसंख्या की ऊंची दर से वृद्धि, (iv) आय के वितरण में अधिक असमानता, (v) आम जनता की निर्धनता, (vi) उत्पादकता का नीचा स्तर, (vii) पूंजी निर्माण की नीची दर, (viii) तकनीकी पिछड़ापन, (ix) बेरोजगारी का ऊंचा स्तर तथा (x) विकास के नीचे सामाजिक सूचक हैं।

पाठांत प्रश्न

1. आर्थिक संवृद्धि क्या है? क्या आपके विचार में आर्थिक संवृद्धि तथा आर्थिक विकास उसी अवधारणा के दो नाम हैं?
2. आर्थिक संवृद्धि तथा मानव विकास में स्वयं चालित संबंध नहीं है?
3. अल्प विकसित देशों की सामान्य विशेषताएं क्या है?
4. मानव विकास सूचकांक (HDI) के मुख्य घटक क्या हैं?
5. धारणीय विकास के अर्थ को समझाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1

1. आर्थिक संवृद्धि तथा आर्थिक विकास में अंतर

3.2

1. मानव विकास का अर्थ

3.3

1. संवृद्धि के आर्थिक तथा गैर-आर्थिक कारक

3.4

1. (d) 2. (b) 3. (c) 4. (d)
5. (a) 6. (a) 7. (a), (c) और (e)